



Samar Singh Bainiwal

05 Nov 2023

07:46 AM

Mississauga

Model: Web-MyKundli

Order No: 119143701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 4-05/11/2023
दिन _____: शनि-रविवार
जन्म समय _____: 07:46:00 घंटे
इष्ट _____: 59:33:21 घटी
स्थान _____: Mississauga
राज्य _____: Ontario
देश _____: Canada

अक्षांश _____: 43:09:00 उत्तर
रेखांश _____: 79:30:00 पश्चिम
मध्य रेखांश _____: 75:00:00 पश्चिम
स्थानिक संस्कार _____: -00:18:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: -01:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 06:28:00 घंटे
वेलान्तर _____: 00:16:29 घंटे
साम्पातिक काल _____: 09:25:49 घंटे
सूर्योदय _____: 07:56:39 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:06:06 घंटे
दिनमान _____: 10:09:27 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 18:36:17 तुला
लग्न के अंश _____: 15:26:04 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: आश्लेषा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: शुक्ल
करण _____: कौलव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डू-डूंगरमल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____:
 पिता का नाम _____:
 माता का नाम _____:
 जाति _____:
 गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1945	कार्तिक	14
पंजाबी	संवत : 2080	कार्तिक	20
बंगाली	सन् : 1430	कार्तिक	18
तमिल	संवत : 2080	आइपसी	19
केरल	कोल्लम : 1199	तुलम	19
नेपाली	संवत : 2080	कार्तिक	19
चैत्रादि	संवत : 2080	कार्तिक	कृष्ण 8
कार्तिकादि	संवत : 2080	आश्विन	कृष्ण 8

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 7
 तिथि समाप्ति काल _____: 14:29:50
 जन्म तिथि _____: 8
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: पुष्य
 नक्षत्र समाप्ति काल _____: 23:59:02 घंटे
 जन्म योग _____: आश्लेषा
 सूर्योदय कालीन योग _____: शुभ
 योग समाप्ति काल _____: 27:05:35 घंटे
 जन्म योग _____: शुक्ल
 सूर्योदय कालीन करण _____: बव
 करण समाप्ति काल _____: 14:29:50 घंटे
 जन्म करण _____: कौलव
 भयात _____: 16:57:26
 भभोग _____: 67:13:13
 भोग्य दशा काल _____: बुध 12 वर्ष 8 मा 10 दि

घात चक्र

मास _____: पौष
 तिथि _____: 2-7-12
 दिन _____: बुधवार
 नक्षत्र _____: अनुराधा
 योग _____: व्याघात
 करण _____: नाग
 प्रहर _____: 1
 वर्ग _____: मेष
 लग्न _____: तुला
 सूर्य _____: सिंह
 चन्द्र _____: सिंह
 मंगल _____: कन्या
 बुध _____: मिथुन
 गुरु _____: तुला
 शुक्र _____: वृश्चिक
 शनि _____: कर्क
 राहु _____: धनु

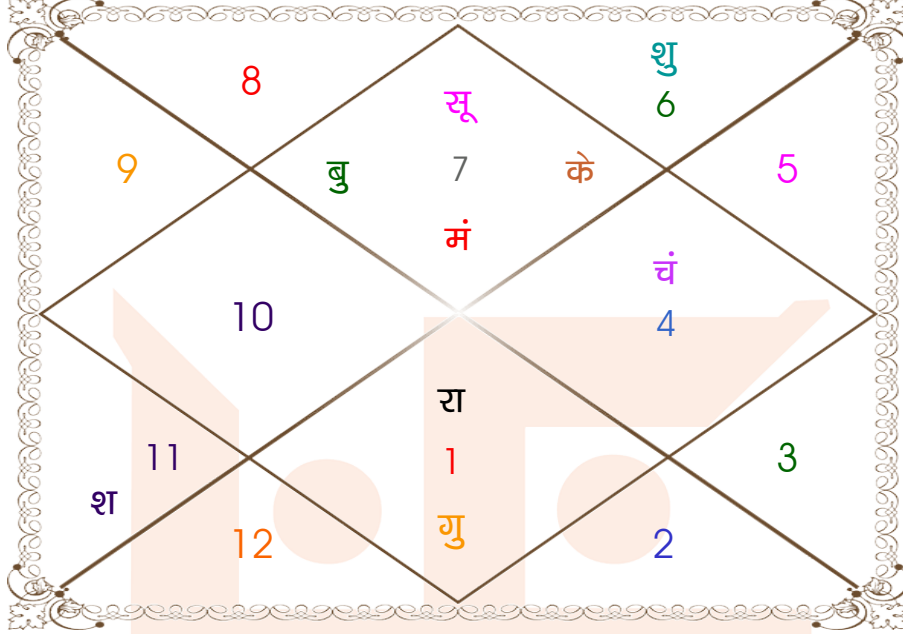


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

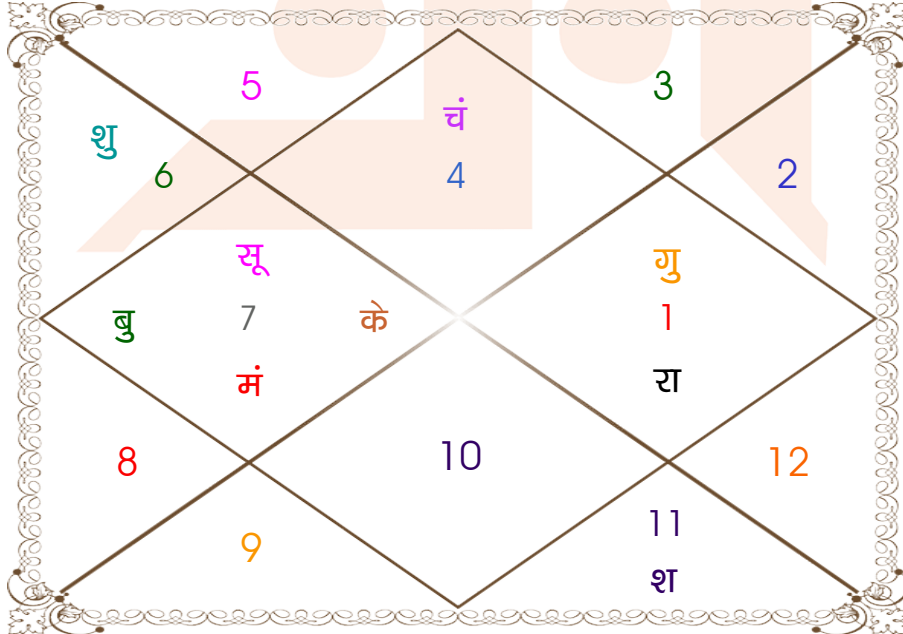


जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	रा		
	गु		
श			चं
		बु	के
		ल	शु
		सू	मं

लग्न कुंडली

	रा		
	गु		
		श	
चं			
	मं	बु	
शु	ल	सू	
	के		

विंशोत्तरी
बुध 12वर्ष 8मा 10दि
बुध

05/11/2023

18/07/2139

बुध	16/07/2036
केतु	17/07/2043
शुक्र	17/07/2063
सूर्य	16/07/2069
चन्द्र	17/07/2079
मंगल	16/07/2086
राहु	17/07/2104
गुरु	17/07/2120
शनि	18/07/2139

योगिनी

भामरी 2वर्ष 11मा 25दि
भामरी

05/11/2023

31/10/2026

	00/00/0000
	05/11/2023
उल्का	01/07/2024
सिद्धा	11/04/2025
संकटा	01/03/2026
मंगला	11/04/2026
पिंगला	01/07/2026
धान्या	31/10/2026



FUTUREPOINT
Astro Solutions



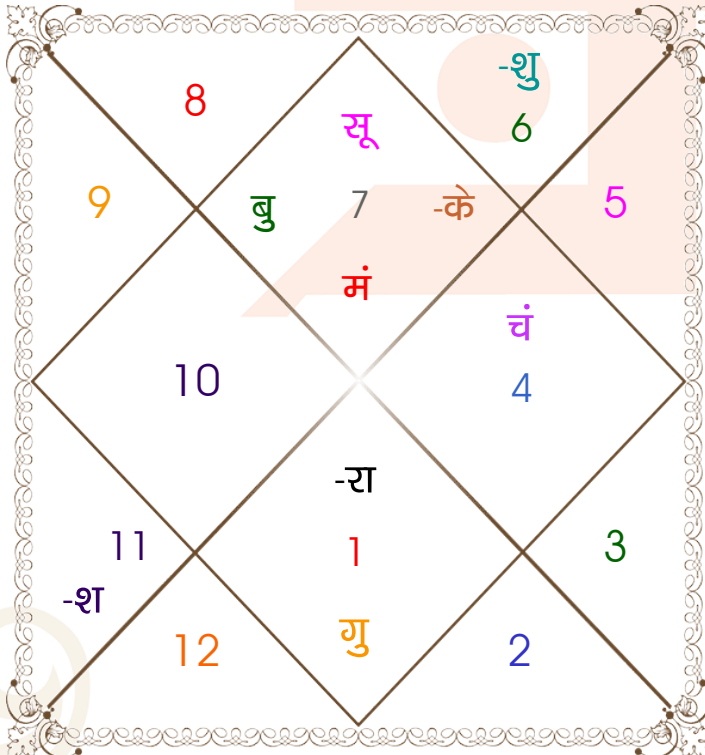
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	15:26:04	275:59:19	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
सूर्य			तुला	18:36:17	01:00:08	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	नीच राशि
चंद्र			कर्क	20:02:33	11:55:38	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	स्वराशि
मंगल	अ		तुला	22:29:10	00:41:45	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	सम राशि
बुध	अ		तुला	28:30:52	01:32:35	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
गुरु	व		मेष	16:00:38	00:08:08	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	सूर्य	मित्र राशि
शुक्र			कन्या	02:40:13	01:04:26	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	नीच राशि
शनि			कुंभ	06:19:37	00:00:07	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	मूलत्रिकोण
राहु			मेष	00:33:16	00:00:18	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	केतु	शत्रु राशि
केतु			तुला	00:33:16	00:00:18	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	सम राशि
हर्ष	व		मेष	27:12:55	00:02:27	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	सूर्य	---
नेप	व		मीन	00:57:52	00:00:59	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	मंगल	---
प्लूटो			मक	03:51:41	00:00:44	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
दशम भाव			कर्क	24:50:20	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	राहु	--

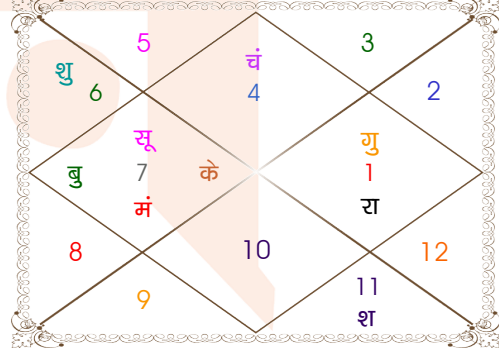
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:11:17

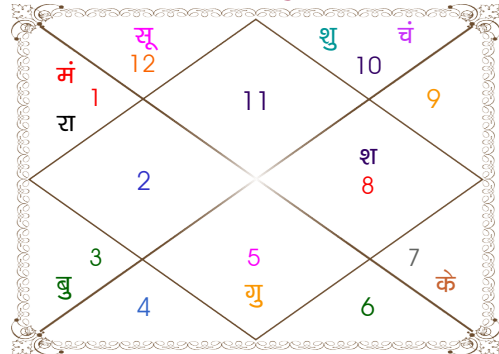
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 02:00:07	तुला 15:26:04
2	वृश्चिक 02:00:07	वृश्चिक 18:34:10
3	धनु 05:08:12	धनु 21:42:15
4	मकर 08:16:17	मकर 24:50:20
5	कुम्भ 08:16:17	कुम्भ 21:42:15
6	मीन 05:08:12	मीन 18:34:10
7	मेष 02:00:07	मेष 15:26:04
8	वृष 02:00:07	वृष 18:34:10
9	मिथुन 05:08:12	मिथुन 21:42:15
10	कर्क 08:16:17	कर्क 24:50:20
11	सिंह 08:16:17	सिंह 21:42:15
12	कन्या 05:08:12	कन्या 18:34:10

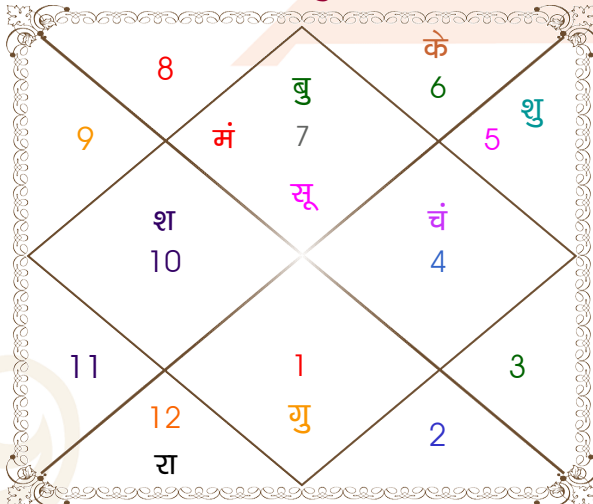
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	15:26:04
2	वृश्चिक	14:22:13
3	धनु	18:25:09
4	मकर	24:50:20
5	कुम्भ	27:36:49
6	मीन	24:09:32
7	मेष	15:26:04
8	वृष	14:22:13
9	मिथुन	18:25:09
10	कर्क	24:50:20
11	सिंह	27:36:49
12	कन्या	24:09:32

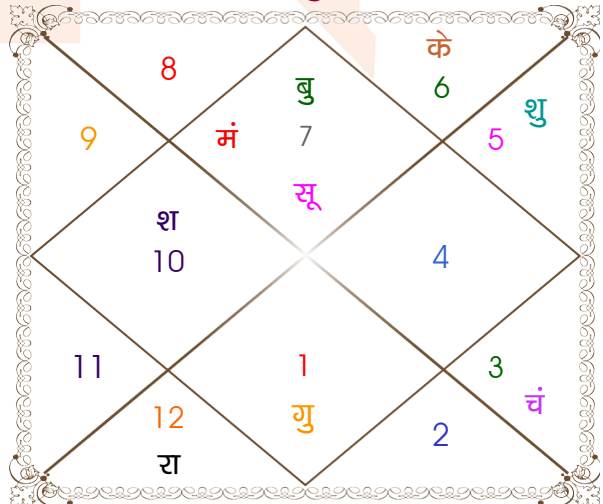
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 12 वर्ष 8 मास 10 दिन

बुध 17 वर्ष 05/11/2023 16/07/2036	केतु 7 वर्ष 16/07/2036 17/07/2043	शुक्र 20 वर्ष 17/07/2043 17/07/2063	सूर्य 6 वर्ष 17/07/2063 16/07/2069	चंद्र 10 वर्ष 16/07/2069 17/07/2079
00/00/0000	केतु 12/12/2036	शुक्र 15/11/2046	सूर्य 03/11/2063	चंद्र 17/05/2070
05/11/2023	शुक्र 11/02/2038	सूर्य 15/11/2047	चंद्र 04/05/2064	मंगल 16/12/2070
शुक्र 09/10/2025	सूर्य 19/06/2038	चंद्र 16/07/2049	मंगल 09/09/2064	राहु 15/06/2072
सूर्य 16/08/2026	चंद्र 18/01/2039	मंगल 15/09/2050	राहु 03/08/2065	गुरु 15/10/2073
चंद्र 15/01/2028	मंगल 16/06/2039	राहु 15/09/2053	गुरु 23/05/2066	शनि 17/05/2075
मंगल 11/01/2029	राहु 04/07/2040	गुरु 16/05/2056	शनि 05/05/2067	बुध 15/10/2076
राहु 01/08/2031	गुरु 10/06/2041	शनि 17/07/2059	बुध 10/03/2068	केतु 16/05/2077
गुरु 06/11/2033	शनि 19/07/2042	बुध 17/05/2062	केतु 16/07/2068	शुक्र 15/01/2079
शनि 16/07/2036	बुध 17/07/2043	केतु 17/07/2063	शुक्र 16/07/2069	सूर्य 17/07/2079
मंगल 7 वर्ष 17/07/2079 16/07/2086	राहु 18 वर्ष 16/07/2086 17/07/2104	गुरु 16 वर्ष 17/07/2104 17/07/2120	शनि 19 वर्ष 17/07/2120 18/07/2139	बुध 17 वर्ष 18/07/2139 00/00/0000
मंगल 13/12/2079	राहु 29/03/2089	गुरु 04/09/2106	शनि 21/07/2123	बुध 13/12/2141
राहु 30/12/2080	गुरु 22/08/2091	शनि 17/03/2109	बुध 30/03/2126	केतु 11/12/2142
गुरु 06/12/2081	शनि 28/06/2094	बुध 23/06/2111	केतु 09/05/2127	शुक्र 06/11/2143
शनि 15/01/2083	बुध 15/01/2097	केतु 29/05/2112	शुक्र 08/07/2130	00/00/0000
बुध 12/01/2084	केतु 02/02/2098	शुक्र 28/01/2115	सूर्य 20/06/2131	00/00/0000
केतु 09/06/2084	शुक्र 03/02/2101	सूर्य 16/11/2115	चंद्र 19/01/2133	00/00/0000
शुक्र 10/08/2085	सूर्य 29/12/2101	चंद्र 17/03/2117	मंगल 27/02/2134	00/00/0000
सूर्य 15/12/2085	चंद्र 29/06/2103	मंगल 21/02/2118	राहु 03/01/2137	00/00/0000
चंद्र 16/07/2086	मंगल 17/07/2104	राहु 17/07/2120	गुरु 18/07/2139	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 12 वर्ष 8 मा 16 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र	बुध - सूर्य	बुध - चंद्र	बुध - मंगल	बुध - राहु
05/11/2023	09/10/2025	16/08/2026	15/01/2028	11/01/2029
09/10/2025	16/08/2026	15/01/2028	11/01/2029	01/08/2031
00/00/0000	सूर्य 25/10/2025	चंद्र 28/09/2026	मंगल 05/02/2028	राहु 31/05/2029
00/00/0000	चंद्र 20/11/2025	मंगल 28/10/2026	राहु 31/03/2028	गुरु 02/10/2029
05/11/2023	मंगल 08/12/2025	राहु 14/01/2027	गुरु 18/05/2028	शनि 27/02/2030
मंगल 15/12/2023	राहु 23/01/2026	गुरु 24/03/2027	शनि 14/07/2028	बुध 09/07/2030
राहु 19/05/2024	गुरु 06/03/2026	शनि 14/06/2027	बुध 04/09/2028	केतु 01/09/2030
गुरु 04/10/2024	शनि 24/04/2026	बुध 26/08/2027	केतु 25/09/2028	शुक्र 03/02/2031
शनि 16/03/2025	बुध 07/06/2026	केतु 25/09/2027	शुक्र 24/11/2028	सूर्य 22/03/2031
बुध 10/08/2025	केतु 25/06/2026	शुक्र 20/12/2027	सूर्य 12/12/2028	चंद्र 08/06/2031
केतु 09/10/2025	शुक्र 16/08/2026	सूर्य 15/01/2028	चंद्र 11/01/2029	मंगल 01/08/2031
बुध - गुरु	बुध - शनि	केतु - केतु	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य
01/08/2031	06/11/2033	16/07/2036	12/12/2036	11/02/2038
06/11/2033	16/07/2036	12/12/2036	11/02/2038	19/06/2038
गुरु 19/11/2031	शनि 10/04/2034	केतु 25/07/2036	शुक्र 21/02/2037	सूर्य 18/02/2038
शनि 29/03/2032	बुध 28/08/2034	शुक्र 18/08/2036	सूर्य 14/03/2037	चंद्र 28/02/2038
बुध 25/07/2032	केतु 24/10/2034	सूर्य 26/08/2036	चंद्र 19/04/2037	मंगल 08/03/2038
केतु 11/09/2032	शुक्र 06/04/2035	चंद्र 07/09/2036	मंगल 14/05/2037	राहु 27/03/2038
शुक्र 27/01/2033	सूर्य 25/05/2035	मंगल 16/09/2036	राहु 17/07/2037	गुरु 13/04/2038
सूर्य 09/03/2033	चंद्र 15/08/2035	राहु 08/10/2036	गुरु 11/09/2037	शनि 03/05/2038
चंद्र 17/05/2033	मंगल 11/10/2035	गुरु 28/10/2036	शनि 18/11/2037	बुध 21/05/2038
मंगल 05/07/2033	राहु 07/03/2036	शनि 21/11/2036	बुध 17/01/2038	केतु 29/05/2038
राहु 06/11/2033	गुरु 16/07/2036	बुध 12/12/2036	केतु 11/02/2038	शुक्र 19/06/2038
केतु - चंद्र	केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि
19/06/2038	18/01/2039	16/06/2039	04/07/2040	10/06/2041
18/01/2039	16/06/2039	04/07/2040	10/06/2041	19/07/2042
चंद्र 07/07/2038	मंगल 27/01/2039	राहु 13/08/2039	गुरु 18/08/2040	शनि 13/08/2041
मंगल 19/07/2038	राहु 18/02/2039	गुरु 03/10/2039	शनि 11/10/2040	बुध 09/10/2041
राहु 20/08/2038	गुरु 10/03/2039	शनि 03/12/2039	बुध 28/11/2040	केतु 02/11/2041
गुरु 18/09/2038	शनि 03/04/2039	बुध 26/01/2040	केतु 18/12/2040	शुक्र 08/01/2042
शनि 21/10/2038	बुध 24/04/2039	केतु 17/02/2040	शुक्र 13/02/2041	सूर्य 28/01/2042
बुध 20/11/2038	केतु 02/05/2039	शुक्र 21/04/2040	सूर्य 02/03/2041	चंद्र 03/03/2042
केतु 03/12/2038	शुक्र 27/05/2039	सूर्य 10/05/2040	चंद्र 31/03/2041	मंगल 27/03/2042
शुक्र 07/01/2039	सूर्य 04/06/2039	चंद्र 11/06/2040	मंगल 19/04/2041	राहु 26/05/2042
सूर्य 18/01/2039	चंद्र 16/06/2039	मंगल 04/07/2040	राहु 10/06/2041	गुरु 19/07/2042

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 5, 9
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध



FUTUREPOINT
Astro Solutions

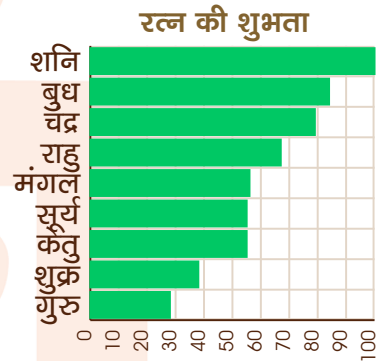


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	सन्तति सुख, सुख
पन्ना	बुध	84%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, कम खर्च
मोती	चंद्र	79%	व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	67%	दम्पति, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	56%	स्वास्थ्य, दम्पति, धन
माणिक्य	सूर्य	55%	स्वास्थ्य, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	55%	स्वास्थ्य, कम खर्च
हीरा	शुक्र	38%	व्यय, दुर्घटना, रोग
पुखराज	गुरु	28%	दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	16/07/2036	61%	67%	56%	97%	28%	50%	100%	67%	55%
केतु	17/07/2043	34%	67%	62%	84%	28%	50%	96%	55%	67%
शुक्र	17/07/2063	34%	67%	56%	91%	28%	56%	100%	73%	61%
सूर्य	16/07/2069	67%	86%	62%	84%	41%	12%	96%	55%	34%
चंद्र	17/07/2079	61%	92%	56%	91%	28%	38%	100%	55%	34%
मंगल	16/07/2086	61%	86%	69%	72%	41%	38%	100%	55%	61%
राहु	17/07/2104	34%	67%	38%	84%	28%	50%	100%	80%	34%
गुरु	17/07/2120	61%	86%	62%	72%	52%	12%	100%	67%	55%
शनि	18/07/2139	34%	67%	38%	91%	28%	50%	100%	73%	34%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/11/2023-29/03/2025	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-12/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-12/07/2039	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-29/08/2044

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-05/02/2064	09/05/2064-12/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-29/08/2068	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-02/08/2081	07/01/2082-19/03/2084	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-19/06/2098	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-02/12/2102	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
सम
सम
शुभ

क्षेत्र

सन्तति सुख
भाग्योदय
व्यावसायिक परेशानी
अल्प बचत
स्वास्थ्य



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को पैतृक धन सम्पत्ति का अभिलषित फल प्रायः प्राप्त नहीं होता है। पैतृक सम्पत्ति को या तो दान दे देता है या आंशिक रूप में नुकसान हो जाता है। प्रेम प्रसंग में आंशिक असफलता होती है एवं गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना अधिक रहती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं और वे समय-समय पर पीड़ा पहुँचाते रहते हैं। जातक को साझेदारी के काम में नुकसान मिलता है।

इस योग के कारण जातक लालची प्रवृत्ति के, लाटरी, जुआ, सट्टा आदि के शैकीन हो जाते हैं। बनते कार्यों में थोड़ी बहुत रुकावटें आती हैं। कभी-कभी बड़ा पद मिलते-मिलते रह जाता है। किसी न किसी कारण से मानसिक परेशानी व चिन्ता पीछा नहीं छोड़ती। जातक को प्रायः पुत्र सन्तान का अभाव रहता है तथा कन्या से मानसिकता जुड़ती नहीं है। ऐसे व्यक्ति को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

इस योग के प्रभाव से इन्द्रिय जन्य गुप्त रोग जीवन में कभी-कभी परेशान करते रहते हैं। दूसरों को दिया हुआ पैसा प्रायः वापस नहीं आता है। फलस्वरूप जातक की आर्थिक स्थिति आंशिक रूप में नाजुक हो जाती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।

10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्णता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान् रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी

अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(05/11/2023 - 16/07/2036)

बुध की महादशा 05/11/2023 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 16/07/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन वृत्ति में प्रगति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान जीवन का सुख, माता से लाभ, सुखमय वैवाहिक जीवन तथा जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

बुध के अपनी ही राशि में होने के कारण आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा जीवनी शक्ति की प्राप्ति होगी। आप में शक्ति तथा उत्साह होगा तथा आप अशावादी और प्रसन्न होंगे। आपका व्यक्तित्व व रंगरूप आकर्षक होगा। अधिक परिश्रम तथा थकावट के कारण कोई संक्रामक बीमारी, बुखार अथवा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैभानिकी तथा मस्तिष्क से संबद्ध सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अचानक लाभ होगा, कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और उच्च पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपको उच्चाधिकारियों का सद्भाव तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको कठिन परिश्रम करना होगा। व्यापारी वाणिज्य व्यापार में कुशल होंगे और उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। आर्थिक-समृद्धि तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में जीवन तथा वाहन का सुख मिलेगा। बुध की दशा के दौरान आपको सभी सुख, माता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी जमीन-जायदाद में भी वृद्धि होगी। सम्पत्ति के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी तथा शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी परीक्षा में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा व्यापार में प्रवीण होंगे। आप तेज हैं और अपनी वाक्पटुता के कारण जाने जाएंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा ललितकला में भी आपकी रुची होगी। आप तेज, कूटनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल, सर्वतोमुखी हैं और विविध विषयों में रुचि रखते हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। उनके साथ आपका संबंध बहुत सुन्दर रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा होगी और उन्हें सम्पत्ति तथा साझेदारी में लाभ की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी के साथ आपका संबंध अत्यन्त मधुर रहेगा। आपकी माता का जीवन अत्यन्त सफल रहेगा और उन्हें सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके पिता का सट्टे तथा ऊँचे कारोबार में निवेश सफल रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विभिन्न स्रोतों से लाभ, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा माता से लाभ की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की मुख्य दशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आपको सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। शुक्र के कारण आपको बच्चों से सुख तथा सट्टे में लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद आनेवाली चन्द्रदशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में लाभ तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु के फलस्वरूप आपको साझेदारों से लाभ तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन होगा और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- बुध - शुक्र
(05/11/2023 - 09/10/2025)**

आपके लिए बुध की महादशा 05/11/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 05/11/2023 को प्रारंभ होकर 09/10/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ेंगे, मगर सीमा में रहेंगे। धन की बचत होगी। आप दयालु और धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे। सब सुख और सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। शत्रुओं पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा। खेती और बागबानी से अच्छी आय हो सकती है। पालतू जंतुओं से सुख मिलेगा। मुकदमे में जीत होगी।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धियों पर विजय होगी। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय करेंगे, धनी बनेंगे। आपकी माता भाग्यशाली होंगी, यात्राएं करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, अच्छी आय, उत्तम जीवन, विभिन्न माध्यमों से आय, भोग-विलास की वस्तुओं की प्राप्ति का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कोई अप्रत्याशित घटना घट सकती है। धन का लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भागीदारी से लाभ होगा, व्यस्तता बढ़ेगी। परामर्शदाताओं की लघु यात्राएं हो सकती हैं, मार्केटिंग और बारीकी के कार्य में लाभ होगा। व्यापारी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नेत्रों और शरीर के निचले अंगों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

**अंतर्दशा :- बुध - सूर्य
(09/10/2025 - 16/08/2026)**

आपके लिए बुध की महादशा 05/11/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 09/10/2025 को प्रारंभ होकर 16/08/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। आपका स्वास्थ्य और ऊर्जा उत्तम रहेंगे। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। प्रबंधन शक्ति उत्तम होगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है, इससे निबटने के लिए

कूटनीति और धैर्य की आवश्यकता पड़ेगी। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। व्यापार में लाभ होगा। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, व्यापार में लाभ होगा, यात्रा और प्रोन्नति का योग है। आपके पिता की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, प्रारंभ किये कार्य पूर्ण होंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता को प्रसिद्धि, प्रोन्नति, कार्यों में सफलता मिलेगी; धन का लाभ होगा। आपके भाई-बहनों को उच्चपद, सम्मान, महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता का संकेत है।

आपकी संतान का भाग्य उत्तम रहेगा, सफलता और समृद्धि मिलेगी, विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल सकता है, यात्रा हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में लाभ होगा, भाग्य चमकेगा, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारियों से विवाद हो सकता है। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

सामान्यतः आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्त संबंधी मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- बुध - चन्द्र
(16/08/2026 - 15/01/2028)**

आपकी बुध की महादशा 05/11/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 16/08/2026 को प्रारंभ होकर 15/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। शिक्षा उत्तम रहेगी। उपलब्धियों द्वारा प्रसिद्धि मिलेगी। उपहार प्राप्त हो सकते हैं, खुशियों और घरेलू सुख का संकेत है। कार्यक्षेत्र में लाभकारी परिवर्तन हो सकता है। साहित्यिक प्रतिभा और बारीकी से काम करने के लिए प्रशंसा मिलेगी। अचल संपत्ति और खेती से लाभ हो सकता है। वाहनसुख रहेगा। जीवन में खुशियां और सुख-सुविधाएं मिलेंगी।

आपके जीवनसाथी की परिवार से घनिष्ठता बढ़ेगी। आपके पिता के धन में वृद्धि होगी; परिवार से खुशियां मिलेंगी। माता को साझेदारी से लाभ होगा, सुख-साधन उपलब्ध होंगे।

आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है, अचानक लाभ हो सकता है, खुशियां मिलेंगी, उपहार-वसीयत आदि से लाभ होगा, साझेदार से लाभ होगा, व्यर्थ की यात्रा संभव है, खर्च बढ़ेगा, कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आपकी संतान परीक्षा और स्पर्धा में सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों

को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- बुध - मंगल
(15/01/2028 - 11/01/2029)

आपके लिए बुध की महादशा 05/11/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 15/01/2028 को प्रारंभ होकर 11/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी, लक्ष्य प्राप्त होगा। स्पर्धा में सफल होंगे। साहस उत्तम रहेगा। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। नीति और धैर्य से लाभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, कार्यों में सफलता मिलेगी, विरासत में धन आ सकता है। पुरानी सुविधाएं बदल कर नया वातावरण निर्मित हो सकता है। तंत्र, मंत्र आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी और व्यापार में लाभ होगा। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता सफल और ऊर्जावान रहेंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए धन, सफलता, लाभकारी निवेश, सुख, कला और साहित्य में रुचि का संकेत है। आपकी संतान सफल और प्रसिद्ध होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी चोट से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए शिवजी की आराधना करें।

अंतर्दशा :- बुध - राहु
(11/01/2029 - 01/08/2031)

आपके लिए बुध की महादशा 05/11/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 11/01/2029 को प्रारंभ होकर 01/08/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। लाभ में वृद्धि होगी। इच्छाशक्ति उत्तम होगी, स्वतंत्र निर्णय लेंगे। समाज में सफलता मिलेगी। व्यापार में अचानक लाभ हो सकता है। स्पर्धियों पर विजय होगी। विवाह हो सकता है। व्यापार संबंधी यात्रा हो सकती है; विदेश भी जा सकते हैं। उच्चपद प्राप्त होगा। अन्य लोग मदद करेंगे।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप दूसरों की सहायता करेंगे।

आपके जीवनसाथी को धन का लाभ होगा। आपके पिता को निवेश और सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी; घरेलू सुख रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, निवेश में लाभ, यात्रा, शिक्षा में प्रसिद्धि, भौतिक सुखों का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा के लिए समर्पित रहेगी, दृढ़प्रतिज्ञ होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी, कार्य में लाभ होगा, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं का लाभ बढ़ेगा, व्यस्त रहेंगे। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा, कार्यप्रणाली उत्तम होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी के बजरंग बाण का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

